JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

चन्द्र भाासन काल में काल गणना पद्धति

डॉ0 गोकुल सिंह देउपा
सहायक प्राध्यापक,
इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग,
सोबन सिंह जीना विश्वविद्यालय, अल्मोड़ा।

भाोध सारांष

भारत में किसी भी शुभ कार्य को करने हेतु शुभ मुहूर्त निकाला जाता है, जिसका निर्धारण पंचाग के द्वारा किया जाता है। चन्द्र शासन काल में इन वैदिक नियमों का पालन किया जाता था। उनके समय में निर्गत ताम्र पत्रों एवं अभिलेखों से इसकी जानकारी मिलती है। इस शोध पत्र में चन्द्र वंश के शासन काल में निर्गत अभिलेखों में प्रयुक्त काल गणना पद्धति का विश्लेषण किया गया है। इसके अतिरिक्त इस शोध पत्र में पंचांग एवं इसके विभिन्न अंगों का संक्षिप्त रूप में वर्णन किया गया है।

साहित्य समीक्षा

पंचांग के निर्माण की पद्धतियों हेतु प्राचीन धार्मिक ग्रन्थों की समीक्षा की गयी है, इसके अतिरिक्त चन्द्र शासन काल में निर्गत ताम्र पत्रों का अध्ययन भी किया गया है, इस कार्य हेतु प्रो0 वी0 डी0 एस0 नेगी, संदीप बडोनी, देहरानदून द्वारा चन्द्र शासन कालीन अभिलेखों को संग्रहित एवं सूचीवद्ध करने का कार्य किया गया है। आपके द्वारा शोध पत्र हेतु महत्वपूर्ण सुझाव प्रदान किया गया है।

भाोध विधि

यह शोध पत्र एक विश्लेषणात्मक एवं वर्णनात्मक शोध पत्र है, जिसमें ऐतिहासिक शोध पद्धति का प्रयोग किया गया है। इस शोध पत्र हेतु प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोतों का प्रयोग किया गया है, प्राथमिक स्रातों के लिये चन्द्र शासन काल में निर्गत ताम्र पत्र का प्रयोग किया गया है, जबकि द्वितीयक स्रोतों के विभिन्न लेखकों द्वारा प्रकाशित पत्रिकाओं एवं पुस्तकों का प्रयोग किया गया है।

परिचय

भारत तथा शेष विश्व में प्राचीन काल में बैज्ञानिक यंत्रों का विकास नहीं हुआ था, तो काल गणना हेतु सूर्य तथा चन्द्रमा की गति को आधार मानकर समय की गणना की जाती थी। इसके लिये आवश्यक था कि खगोलीय पिण्डों की गति का आंकलन किया जाये। ये ग्रह एक निश्चित समयान्तराल में एक स्थान विशेष से गुजरते थे। अतः काल गणना हेतु किसी एक स्थान को आधार माना गया था। प्राचीन काल में भारत में काल गणना हेतु उज्जैन को आधार माना गया। प्राचीन काल में भारत में काल गणना हेतु भौगोलिक स्थिति के कारण उज्जैन को आधार माना गया, उत्तराखण्ड में स्थानीय काल गणना हेतु अल्मोड़ा तथा श्रीनगर गढ़वाल को आधार माना गया।

जिसमें चन्द्र एवं सूर्य को आधार मानकर गणना की मुख्य दो विधियॉ प्रचलन में हैं–

- सूर्य को आधार मानकर
- चन्द्रमा को आधार मानकर

सूर्य को आधार मानकर

सूर्य को आधार मानकर की जाने वाली गणना में प्रत्येक दिन को निश्चित संख्या के आधार गणना की जाती है। इसमें दिनों को गते या प्रवेष्ठे उत्तराखण्ड में पैठ संख्या से गिना जाता है। पृथ्वी सूर्य के चारों ओर 360 अंश में परिक्रमण किया जाता है। जिसे 30 अंश के 12 भागों में विभाजित है। प्रत्येक 12 भागों को 12 राशियों या मासों के नाम से जाना जाता है। जिस तिथि को सूर्य एक राशि से सूर्य राशि में प्रवेश करता है, प्रथम तिथि या संक्रान्ति कहा जाता है। इस प्रकार साल में कुल 12 संक्रान्तियॉ होती हैं, जिसमें मेष संक्राति को प्रथम मास या राशि माना जाता है। जिसे सौर पंचांग के अनुसार हिन्दू धर्म का प्रथम मास माना जाता है, जो कि अंग्रेजी केलेण्डर के मार्च माह तथा हिन्दू माह चैत में होता है।

सौर मास

सूर्य द्वारा एक राशि में विचरण करने की अवधि सौर मास कहलाती है।

चन्द्रमा को आधार मानकरः

चन्द्रमा को आधार मानकर की जाने वाली गणना पद्धति में प्रत्येक दिन को तिथि या पंचांग कहा जाता है। चन्द्रमा को आधार मानकर की जाने वाली गणना की दो विधियॉ प्रचलित हैं।

अमान्त पद्धतिः इस पद्धति में अमावस्या से माह की गणना की जाती है। अर्थात अमावस्या को प्रथम तिथि माना जाता है। उत्तराखण्ड के पर्वतीय क्षेत्रों एवं हरिद्वार में मास गणना हेतु अमान्त पद्धति का प्रचलन है।

पूर्णमान्त पद्धतिः इस पद्धति में पूर्णिमा से माह की गणना की जाती है। अर्थात पूर्णिमा को प्रथम तिथि माना जाता है। कश्मीर, नेपाल, उत्तराखण्ड के गढ़वाल के कुछ भागों में उत्तर प्रदेश के काशी में इस पद्धति का प्रचलन है।

इस गणना का मुख्य आधार पंचांग होता है, जिसके पॉच अंग होते है–

तिथिर्वारश्च नक्षत्रं योगः करणमेव च ।
एतेषां यत्र विज्ञानं पञ्चाङ्ग तन्निगद्यते द्यद्य।

1. तिथि
2. वार
3. नक्षत्र
4. योग
5. करण

इतिहास

वैदिक काल में काल गणना हेतु पूर्णिमान्त पद्धति का प्रयोग किया जाता है। धीरे–धीरे यह पद्धति अमान्त पद्धति में बदलने लगी। 57 बी0सी0 में विक्रमी सम्वत् प्रारम्भ होने पर उज्जैन पंचांग का पुनः प्रयोग होने पर वैदिक पूर्णिमान्त पद्धति को पुनः प्रारम्भ किया गया था।

सिद्धान्त

इसमें मुख्यतया दो सिद्धान्तों का प्रयोग किया जाता है–

- आर्यभट्ट सिद्धान्त
- वराहमिहिर सिद्धान्त

भारत में प्रचलित प्रमुख सम्वत्

क्रम सं	सम्वत	प्रारम्भ (ईसा वर्ष में)
1	बौद्धकाल	544 बी0सी0
2	महावीर काल	528 बी0सी0
3	विक्रमी सम्वत्	57 बी0सी0
4	शक सम्वत्	78 ए0डी0
5	कल्चुरी / चेदि सम्वत्	248 ए0डी0
6	गुप्त सम्वत्	319 ए0डी0
7	बल्लभी सम्वत्	319 ए0डी0
8	हर्ष सम्वत्	606 ए0डी0
9	हिजरी सम्वत्	622 ए0डी0
10	नेपाल– नेवार काल	878 ए0डी0
11	लक्ष्मण सम्वत्	1119 ए0डी0
12	ग्रिगोरियन पंचांग	1582 ए0डी0

कुमाऊं में प्रचलित पंचाग

कुमाऊं में प्रचलित पंचाग का निर्माण रामदत्त जोशी द्वारा किया गया था। राम दत्त जोशी का जन्म नैनीताल जिले के भीमताल के शिलौटी गांव में हुआ था, आपके पिता कुमाऊं के राजाओं के ज्योतिर्विद थे, जिनका नाम पं०

हरिदत्त जोशी था। आपकी प्रारम्भिक शिक्षा गॉव से आगे की शिक्षा, हल्द्वानी बेलेजली लाज मिशन स्कूल से हुई थी। पं रामदत्त जोशी बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे, जो ज्योतिष के साथ, साहित्य एवं समाज सेवा से जुड़े रहे। 1906 में उन्होंने भीमताल में रामलीला कमेटी बनाकर वहां पर रामलीला मंचन का कार्य शुरु करवाया। 1938 में हल्द्वानी में उन्होंने सनातन धर्म सभा की स्थापना की और इस सभा से माध्यम से सनातन धर्म संस्कृत विद्यालय की स्थापना करवाई। वर्तमान समय में कुमाऊं में प्रचलित पंचांग का निर्माण आपके द्वारा ही किया गया है।

उत्तराखण्ड से प्राप्त अभिलेखों में वर्णित काल गणना पद्धतियॉः

उत्तराखण्ड के कत्यूरी कालीन अभिलेखों में पूर्णिमान्त पद्धति का प्रयोग किया गया है। उत्तराखण्ड से प्राप्त ताम्र पत्रों में वर्ष गणना हेतु शक सम्वत् का प्रयोग किया गया है। वर्तमान समय में जन्म के अवसर पर बनने वाली कुण्डिलियों में शक सम्वतसर का ही प्रयोग किया जाता है। शक सम्वत् में 78 जोड़ने पर अंग्रेजी कैलेण्डर का वर्ष निकाला जाता है। जैसे इस वर्ष शक सम्वत् 1946 है जिसमें 78 जोड़ने पर अंग्रेजी वर्ष 2024 निकलता है।गोरखा या नेपाल में प्रचलित सम्वतसर विक्रमी सम्वत् है, इसलिये गोरखा काल में नेपाल से निर्गत अभिलेखों या आदेश पत्रों में विक्रमी सम्वत् का ही उल्लेख किया है, जिसमें क्षेत्रीय आधार निर्गत आदेशों या अभिलेखों में स्थानीय आधार पर परिवर्तन किया गया है।

उत्तराखण्ड के पांडुकेश्वर, कत्यूर घाटी, संधाली स्थानों से प्राप्त ताम्रपत्रों में पूर्णिमान्त पद्धति का प्रयोग किया गया था। जबकि उत्तराखण्ड के कत्यूर घाटी के कोटभ्रामरी से प्राप्त राजा देवीचन्द द्वारा प्रदत्त ताम्रपत्र में अमान्त पद्धति का प्रयोग किया गया है। इस विषय मे कुछ विद्वानों का मत है कि यह पूर्णतः ब्राह्मण के व्यक्तिगत विवेकाधिकार पर निर्भर करता था कि वह किस पद्धति का प्रयोग करता है। किन्तु यह निष्कर्ष अर्थपूर्ण नहीं लगता है कि एक ही व्यक्ति द्वारा लिखे गये लेखों में अलग–अलग स्थानों पर अलग–अलग पद्धतियों का प्रयोग किया गया है, जिससे यह निष्कर्ष ज्योतिर्विदों द्वारा इस सम्बन्ध स्थानीय आधार पर प्रचलित परम्परा को वरीयता दी जाती थी। उत्तराखण्ड में चन्द काल के तीन ताम्रपत्र राजाओं के द्वारा स्वयं लिखे गये हैं, अर्थात जो स्वहस्तलिखितम हैं। राजा ज्ञानचन्द, राजा विजयचन्द, राजा दीपचन्द इन ताम्रपत्रों में पूर्णिमान्त पद्धति का प्रयोग किया गया है। गढ़वाल से प्राप्त ताम्रपत्रों में तिथि तथा गते को एक साथ प्रयोग किया गया है।

क0सं0	श्राजा	तिथि	श्रेत
1	विक्रम चन्द्र	साके 1345 आषाढ़ पूर्णमासी सौर विष्णु तिथौ	एटकिन्सन, 1884 : 528 फ्यूरर,1881: 50
2	भारती चन्द्र	साके 1367 ज्येष्ठ वदि दिन 11 गते शुक्रवासरे अमावस्या तिथो	डॉ0 यशवन्त कठोच, 2019: 425 डॉ0 एस0 पी0 डबराल, 1992: 210.211
3	भारती चन्द्र	साके 1367 आषाढ़ बदी 3 रविवासरे	डॉ0 एम0 पी0 जोशी. 1994: 234
4	भारती चन्द्र	साके 1371 वैशाख सुदी एकादशी तिथि शनिवार	डॉ0 राम सिंह, 2002: 336 डॉ0 यशवन्त कठोच, 2020: 425
5	भीष्म चन्द्र	साके 1436 संवत् 1571 भाद्रपद सूर्यग्रहण	डॉ0 एम0 पी0 जोशीए 1990: 235 डॉ0 राम सिंह, 2002: 339
6	रूद्र चन्द्र	साके 1516 कार्तिक सुदि 1	डॉ0 यशवन्त कठोच, 2020: 429
7	रूद्र चन्द्र	साके 1516 कार्तिक सुदी 1 चन्द्रवासरे वृश्चिक सक्रान्तो	डॉ0 राम सिंह, 2002: 341 फ्यूरर, 1881: 49

सूची संदर्भ सूची:

- विक्रम चन्द्र, ताम्र पत्र अभिलेख, बालेश्वर, चम्पावत।
- डॉ0 एम0 पी0 जोशी, एलन सी0 फेंगर, वो0–1, 1994, हिमालया पास्ट एण्ड प्रजेंट, अल्मोड़ा बुक डिपो, अल्मोडा, आई.एस.बी.एन.– 8185865221
- डॉ0 राम सिंह, 2002, राग भाग काली कुमा कुमाऊं, पहाड़, परिक्रमा तल्ला डांडा, नैनीताल, आई0एस0बी0एन0–81–86246–18–5
- एटकिंसन, 1884, हिमालयन डिस्ट्रिक्ट्स, खंड–2, राजकीय प्रेस, संयुक्त प्रान्त
- कठोच, यशवन्त सिंह, 2019, उत्तराखंड का नवीन इतिहास, आईएसबीएन– 978–81–86844–91–5
- श्रीवास्तव, के.सी., 2015, प्राचीन भारत का इतिहास ईवीएम संस्कृति, यूनाइटेड बुक डिपो, ISBN-B019MHJZU